जल संरक्षित तो जीवन सुरक्षित

दीपिका सैनी, एम.एस.सी.,
बी.एड. (जन्तु-विज्ञान)

**"जल संरक्षित कीजिये, जल जीवन का सार,
जल न रहे यदि जगत में, जीवन है बेकार ।"**

जल ही जीवन है । इस बात से हम सभी परिचित हैं । परन्तु शायद हम सभी ये बात नहीं जानते कि हमें आगे आने वाले समय में जल संकट की भारी समस्या का सामना करना पड़ेगा। हमारी पृथ्वी पर दो तिहाई भाग जल है परंतु संपूर्ण उपलब्ध जल का 1-2 प्रतिशत ही पीने योग्य है। उसका भी एक भाग ध्रुवों पर बर्फ के रूप में जमा है । अब सोचिए, हमारे पास उपयोग योग्य कितना जल उपलब्ध है और इसकी बर्बादी निरंतर होती रहती है।

यदि इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया तो आगे आने वाले समय में यह समस्या और भी विकराल रूप धारण कर लेगी। इस समस्या से बचने के लिये हमें आज ही से जल की बचत व उसकी बर्बादी रोकने की शुरूआत कर देनी चाहिए ।

वैज्ञानिक मनुष्यों को लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि इस अंधाधुंध दोहन के कारण आने वाले समय में धरती पर जल की बेहद कमी हो जाएगी और जीवन संकट में पड़ जायेगा । विश्व भर में राजनेता भी कह रहे हैं कि यदि अगला विश्व-युद्ध होगा, तो निश्चय ही वह जल के लिए होगा । तात्पर्य यह है कि आज हर तरफ जल-संरक्षण की अनिवार्यता बताई जा रही है। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि पृथ्वी पर जल की उपलब्धता निरन्तर बनी नहीं रह सकती, बल्कि दिनों-दिन घटती ही जाएगी । वर्ष 1951 में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता भारतवर्ष में जहाँ 5,177 घनमीटर थी, वहीं बढ़ती जनसंख्या के कारण वर्ष 2001 में घटकर केवल 1,869 घनमीटर ही रह गई है ।

यही कारण है कि आज पूरे विश्व में जल वैज्ञानिकों की सबसे बड़ी चिन्ता जल संरक्षण की है । जल संरक्षण केवल सरकारी घोषणाओं अथवा योजनाओं का ढोल पीटने से नहीं होगा बल्कि पूरे विश्व में जोर-शोर से जन-जागरण अभियान चलाकर हमें प्रत्येक मनुष्य को जल संरक्षण अभियान से जोड़ना होगा । हमें निम्न पंक्तियों को सार्थक बनाना होगा ।

"जल को नहीं व्यर्थ करे कोई, जल का संरक्षण धर्म हो,
जल की महिमा समझना ही, मानव का सुन्दर कर्म हो।"

जल संरक्षण हेतु कुछ सरल एवं कारगर उपाय-

1. हमारे घर, विद्यालयों, कालेजों और सार्वजनिक स्थानों पर यदि कहीं नल खुला हो तो तुरन्त बन्द कर दें । बड़ी-बड़ी औद्योगिक इकाइयों में जहाँ जल का अत्यधिक प्रयोग होता हैं, उन्हें Water Recycling Plant लगाना चाहिये जिससे पानी को साफ कर दोबारा इस्तेमाल में लाया जा सकता है इससे दो फायदे होंगे -
   (i) पानी का पुन: उपयोग कर उसकी बर्बादी रोकी जा सकेगी ।

(ii) जल प्रदूषण पर थोड़ा अंकुश लगाया जा सकेगा । जैसा कि सभी औद्योगिक इकाइयों का कचरा तालाब और अन्य स्वच्छ पानी के प्राकृतिक स्रोतों में फेंक दिया जाता है । जल प्रदूषण को रोक कर भी पीने के पानी को संरक्षित किया जा सकेगा ।

2. जल संरक्षण की एक नई विधि सामने आयी है Rain Water Harvesting । इस विधि द्वारा वर्षा के जल को संग्रहीत किया जाता है और फिर उसे साफ कर घर के अन्य कामों में उपयोग में लाया जाता है जैसे सफाई, कपड़े-धोना आदि ।

3. सबको जागरूक नागरिक की तरह जल संरक्षण का अभियान चलाते हुये बच्चों और महिलाओं में जागृति लानी होगी । स्नान करते समय बाल्टी में जल लेकर शावर या टब में स्नान की तुलना में बहुत जल बचाया जा सकता है । पुरूष वर्ग दाढ़ी बनाते समय यदि टोंटी बन्द रखें तो बहुत जल बच सकता है, रसोई में जल की बाल्टी या टब में अगर बर्तन साफ करें, तो जल की बहुत बड़ी हानि रोकी जा सकती है ।

4. विज्ञान की मदद से आज समुद्र के खारे जल को पीने योग्य बनाया जा रहा है, गुजरात के द्वारिका आदि नगरों में प्रत्येक घर में पेयजल के साथ-साथ घरेलू कार्यों के लिये खारे जल का प्रयोग करके शुद्ध जल का संरक्षण किया जा रहा है, इसे बढ़ाया जाये ।

5. गंगा और यमुना जैसी सदानीरा बड़ी नदियों की नियमित सफाई बेहद जरूरी है । नगरों और महानगरों का गंदा पानी ऐसी नदियों में जाकर प्रदूषण बढ़ाता है, जिससे मछलियाँ आदि मर जाती हैं और यह प्रदूषण लगातार बढ़ता ही चला जाता है । बड़ी नदियों के जल का शोधन करके पेयजल के रूप में प्रयोग किया जा सके, इसके लिए शासन-प्रशासन को लगातार सक्रिय रहना होगा ।

6. अगर प्रत्येक घर की छत पर 'वर्षा जल' का भण्डारण करने के लिए एक या दो टंकी बनाई जायें और इन्हें मजबूत जाली या फिल्टर कपड़े से ढक दिया जाये तो हर नगर में जल संरक्षण किया जा सकेगा ।

7. टॉयलेट में लगी फ्लश की टंकी में प्लास्टिक की बोतल में रेत भरकर रख देने से हर बार एक लीटर जल बचाने का कारगर उपाय इस्तेमाल किया जा सकता है ।

8. यदि हम उपरोक्त उपायों को धीरे-धीरे अपने घरेलू जन-जीवन में धारण कर लें तो हमारी आने वाली पीढ़ी भी पानी का उपयोग कर सकेगी ।